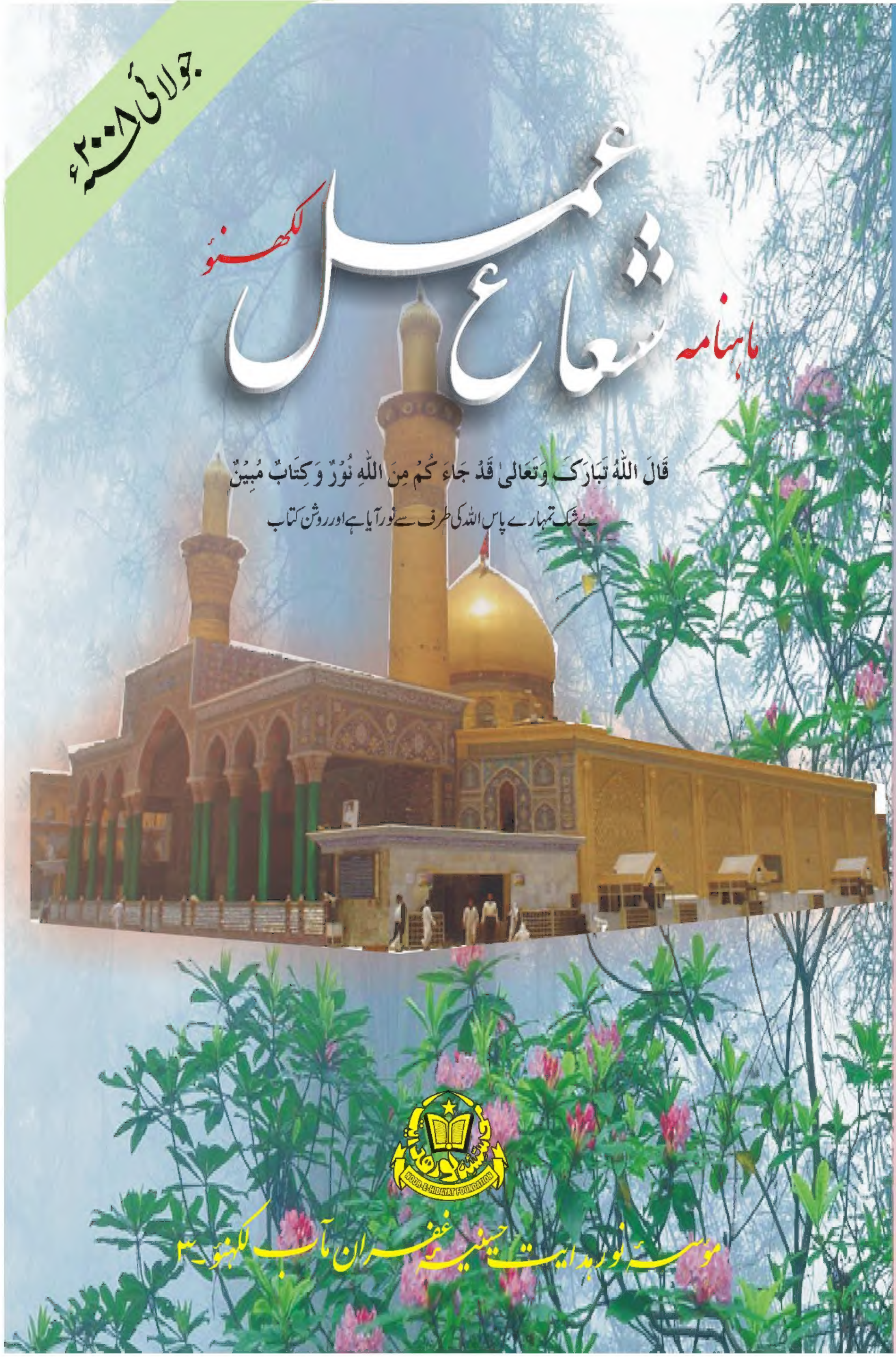

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postel Regd.No. SSP/LW/NP-75/2008-10
P.O. Chowk, Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

SHUA-E-AMAL

Lucknow July-2008

NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufran Maab, Chowk LUCKNOW-3 (U.P.) INDIA, Phone : 2252230

वर्ष–5

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd No-SSP/LW/NP-75/2008-10
P.O. Chowk. Dispatch Date: 2 & 6 of every month

अंक – 1

माह जुलाई – 2008 लखनऊ

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन की
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

शुआ-ए-अमल
"लखनऊ"

संरक्षक
मौलाना सै. कल्बे जवाद नक़वी साहब

सम्पादक
सै. मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़' जायसी

सलाहकारी परिषद
प्रोफेसर अल्लामा सै0 अली मुहम्मद नक़वी, प्रोफेसर सै0 हुसैन कमालुद्दीन अकबर,
मु0 र0 आबिद, सैय्यद समीउल हसन वसीम, तज़हीब नगरौरी

वार्षिक – 200 रु   मिलने का पता   क़ीमत – 20 रु

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन
इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड
चौक लखनऊ – 3 (उ.प्र.) भारत फोन न0 0522–2252230

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ–ए–अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ–3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै0 मुस्तफा हुसैन नक़वी 'असीफ जाएसी'।

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

न0 मज़्मून लेखक पेज न0

1– हज़रत अली (अ0) और जमहूरी ख़िलाफ़त

हकीमुल उम्मत अल्लामा हिन्दी सै0 अहमद नक़वी ताबा सराह 3

2– मेराज

अल्लामा सै मुहम्मद रज़ी साहब क़िब्ला मुजतहिद पाकिस्तान 7

3– शादीख़ाना आबादी

सैय्यिदुल उलमा आयतुल्लाहिल उज़्मा सै0 अली नक़ी नक़वी ताबा सराह 12

4– मुख्य समाचार

इदारा 15

हज़रत अली (अ०) ने फ़रमाया–

1– सबसे बुरा दोस्त वह है जो तुम्हें गुनाह की तरफ़ ले जाए।

2– हर शख़्स की क़ीमत वह हुनर है जो उस शख़्स में है।

3– बहुत से पढ़े–लिखे लोगों को (दीन से) बेख़बरी तबाह कर देती है और जो इल्म उनके पास होता है उन्हें ज़रा भी फ़ाएदा नहीं पहुँचाता।

4– ज़बान एक ऐसा दरिन्दा है कि अगर उसे खुला छोड़ दिया जाए तो फाड़ खाए।

हज़रत अली (अ0) और जमहूरी ख़िलाफ़त

हकीमुल उम्मत अल्लामा हिन्दी सैय्यद अहमद नक़वी ताबा सराह

हज़रत अली की हुस्ने तद्बीर

हिजाज़ के जंगजू जाहिल अरब और ख़ुद ग़रज़ व लालची, कंगाल, कीनावर, बेअम्नी की ज़िन्दगी बसर करने वाले ऐसे न थे जो रसूल (स0) की कुछ दिनों की तालीम से तहज़ीब और शराफ़त वाले हो जाते। यह ख़ूबियाँ तो अरबों को मीरास में मिली थीं जिसके दूर होने के लिए बहुत बड़े ज़माने की मोहलत चाहिए थी। इसीलिए तो रसूल (स0) की आँख बन्द होते ही उस क़ौम की फ़ितरी ज़हनियत लौट आई थी। रसूल (स0) की आला तालीम का असर अगर उन पर कुछ होता तो रसूल (स0) का लाशा बे कफ़न व बे दफ़्न न पड़ा रहता। कम से कम मदीने के आस–पास के लोग रसूल (स0) के जनाज़े के साथ होते, धूम से रसूल (स0) का जनाज़ा उठता। मज़ा तो यह कि ख़ुद रसूल के साथी दफ़्न में शरीक न थे, ख़िलाफ़त की धुन में लगे हुए थे। रसूल (स0) के दफ़्न से अगर ख़िलाफ़त अहम थी तो अली (अ0) व बनी हाशिम ने इस अहमियत को क्यों नज़रअन्दाज़ किया। रसूल के साथियों ने अली (अ0) व बनी हाशिम को क्यों न मजबूर किया कि पहले ख़िलाफ़त के मसले को मिलजुल कर तैय करें, फिर रसूल का दफ़्न मिलजुल कर हो। यही तो तीसरे ख़लीफ़ा के साथ सबने किया। न किसी ने गुस्ल दिया, न कफ़न, न नमाज़ जनाज़ा पढ़ी, न दफ़्न किया। तारीख़ बता दे किस धूम से तीसरे ख़लीफ़ा का जनाज़ा उठाया? उस वक़्त मिस्री बलवाइयों का बहाना था। एक हज़ार बलवाइयों के मुक़ाबले में हज़ारों मदीने के बसने वाले चूड़ियाँ पहने घरों में बैठे रहे और तीन रोज़ तक ख़लीफ़ा उसमान की लाश पड़ी रहने दी! अगर ख़िलाफ़त की इतनी अहमियत थी कि रसूल बे कफ़न और बे दफ़्न पड़े रहे और ख़िलाफ़त साज़ी पहले हो जाए, तो यह अहमियत ख़लीफ़ा उसमान के वक़्त क्यों जाती रही? सात रोज़ तक उम्मत बे ख़लीफ़ा रही। सारी हाए वावेला अली (अ0) की ख़िलाफ़त के बाद हुई। उसमान की लाश पर कौन रोने आया? यह सब तारीख़ के खुले वाक़ेआत हैं। धांदली जो चाहे करो। ख़ुदा की किताब जलाई गई। रसूल की सोहबत की यही इज़्ज़त थी कि आपस में जूती पैज़ार, रद्दो क़दह, मार–पीट के मुज़ाहरे शुरु हो गए। किसी सहाबी की मार–पीट से पसलियाँ तोड़ दी गईं, किसी सहाबी को इतना पीटा कि फ़त्क़ का मर्ज़ हो गया, कोई शहर बदर किया गया और किसी सहाबी की मूँछें उखाड़ी गईं, किसी को धोके से रात को क़बीले वालों ने बेख़बरी में क़त्ल किया, और उसी रात उसकी बीवी के साथ उसके शौहर की लाश के सामने ज़िना किया गया। रसूल (स0) के अहलेबैत का इतना पास किया कि सैय्यदा के घर को जलाने के लिए लकड़ियाँ इकटठा की गईं, दरवाज़ा रसूल की बेटी पर इस तरह ढकेला कि पेट में जनाब मोहसिन की शहादत हुई। अली (अ0) की

गर्दन में रस्सी डाली गई, ख़ुम्स औलादे रसूल का हक़ बन्द किया गया, बाग़े फ़िदक छीन कर औलादे रसूल को फ़ाक़ाकशी में डाल दिया गया। तारीख़ें ऐसे वाक़ेआत से भरी पड़ी हैं। इस आपाधापी और हड़बोंग में जब कि मुल्क में मार्शल लॉ जारी हो, रसूल (स0) के प्रोग्राम का पूरा करने वाला, रसूल का मिशन चलाने वाला रस्साकशी में मुबतिला होता तो अपना क़त्ल कराता और मुनाफ़ेक़त के सैलाब में बेमुज़ाहेमत व रोक टोक के इरतेदाद का बाअिस होता और हक़ की आवाज़ भी बुलन्द करने वाला न रहता।

अली (अ0) ने वही किया जो ग़ारे हिरा के बैठने वाले ने कियाः ख़ामोश मुक़ाबलाः तर्के मवालात के साथ दीने हक़ की ख़ामोश तबलीग़। रिसालत की शुरुआत में जैसे रसूल (स0) के लिए शेबे अबी तालिब की क़ैद थी ऐसे ही अली (अ0) घर में क़ैद दीने हक़ की तबलीग़ करते रहे।

इस्लामी रवादारी

अली (अ0) ने तीनों ख़िलाफ़तों में अपने दुश्मनों से उनकी भलाई के मौक़े पर शिरकत और मदद में कमी नहीं की और अमली इस्लामी रवादारी का सुबूत दिया, उनकी मुख़ालिफ़ाना रफ्तार से अलग रहे। यह इस बात की तालीम थी कि जब दुश्मनों में घिर जाओ, मक़ासिद व उसूल की तबलीग़ दुश्वार हो, उस वक़्त बेहतरीन तबलीग़ का तरीक़ा यही है कि अच्छाईयों में ताईद व शिरकत करो और बुराई में मदद न करो।

जमहूरियत और इस्लाम

जमहूरियत को इस्लाम से दूर का भी लगाव नहीं है। क्या कोई नबी जमहूर के वोट से चुना गया है? ख़ुद रसूल (स0) क्या जमहूर के वोट से चुने गए? दावते ज़ुलअशीरा में रसूल (स0) का साथ किसने दिया सिवाए जनाबे ख़दीजा और अली मुर्तज़ा (अ0) के? किसने सबसे पहले नमाज़ पढ़ी? रसूल (स0) ने किस क़ौल और फेल से जमहूरियत की ताईद की? मन्सूब की हुई हदीसों और आयतों का जवाब हमारी किताब ''जमहूरियत व इस्लाम'' में देखो। रसूल (स0) तो जमहूरियत मिटाने आए थे। ''क़ुसैइ'' ने क़ुरैशी कांग्रेस की बुनियाद डाली और इसी से उनको शोहरत हुई, क्योंकि वह अम्नो अमान के ज़ामिन थे। उस वक़्त सरदार और रईस, वोट और अरब की कस्रते राए से चुना जाता था।

(तारीख़े ख़ज़रमी मुअल्लिफ़ डायरेक्टर मिस्र युनिवर्सिटी)

रसूल (स0) ने इस जमहूरियत के ख़लाफ़ जेहाद का झण्डा बुलन्द किया और अपनी ज़ात को आम राए के ख़िलाफ़ पेश किया। जमहूरियत ऐसी ख़तरनाक चीज़ थी जिससे अरस्तू जैसी हस्ती ने कानों पर हाथ धरे और कहाः मेरे ख़याल में शख़्सी हुकूमत जमहूरी हुकूमत से बेहतर है शर्त यह है कि बादशाह इन्साफ़ करने वाला हो, नेक, नम्र और अपनी चाहतों से पाक हो।'' ख़ुद ''ख़ज़रमी'' ने क़बूल किया है कि सबसे अच्छा तरीक़ा यही था कि ख़लीफ़ा अपने मरने से पहले वली अहद तै करे, क्योंकि यह उस इख़्तिलाफ़ को दूर करेगा जो चुने गए इमाम की मनमानी से उम्मत के लिए तबाही वाला होगा।

सक़ीफ़ा में सहाबियों का इज्तेमा होकर वोटिंग होती है। अली (अ0) और अली (अ0) के मानने वाले ख़ामोश घर में बैठते हैं और एलानिया दरबारे ख़िलाफ़त में जमहूरियत के ख़िलाफ़ एहतेजाज करते हैं। तीनों ख़िलाफ़तों में उनके

एहतेजाज तारीख़ों में देखिये, इस्लाम से पहले की मुर्दा तारीख़ों की पैरवी करने वालों से हमेशा कटे रहे। गर्दन में रस्सी बंधवाई, क़त्ल की और घर जलने की धमकियाँ सहीं, माल को छीना गया, लेकिन इस जमहूरियत को सही नहीं ठहराया। यही हाल इनकी औलाद का रहा। तारीख़ के न भूलने वाले ज़ुल्म सब झेले, लेकिन जमहूरियत की मदद न करनी थी न की।

जमहूरियत की ख़राबियाँ

हमारी किताब ''जमहूरियत व इस्लाम'' में तफ़सीली बहस मौजूद है लेकिन मुख़्तसर यह है कि ''वोटिंग में हमेशा देखा जाता है कि रोज़ तमाम आलम की जमहूरियतों में तजरेबा और मुशाहेदा गवाह है कि वोट उन्हीं लोगों को मिलते हैं जो आम राए को ज़रपाशी, मक्कारी, धोका दही, हलक़ए अहबाब की वुस्अत, चालबाज़ी, चर्ब ज़बानी पर ज़ोर और प्रोपेगण्डे से मुसख़्ख़र कर सके। आज यूरोप व अमरीका बल्कि दुनिया भर का गोशा–गोशा खुली हुई मिसालें हैं, कहीं दुश्मनी के जज़्बात को भड़काते, कहीं ग़लत इल्ज़ाम व इत्तेहाम लगाकर मुक़ाबिल की हरदिल अज़ीज़ी को मिटाते हैं। ऐसी जमहूरियत को इस्तेह्क़ाक़ व क़ाबलियत और हक़ परस्ती से दूर का भी लगाव नहीं होता है। इस्लाम जो हक़ परस्ती, तबलीग़े हक़ व सदाक़त व रवादारी, मुहब्बत और एख़लास के लिए आया था, इस में ऐसी गन्दी चीज़ की कहाँ गुन्जाइश थी? जमहूरियत भी शहनशाहियत व इक़्तेदार का नाम है जो शख़सियत से बहुत ही मक्कार और ख़ुदग़रज़ों, इक़्तेदार परस्तों के हाथ में होता है। इस्लाम तो शहनशाहियत व ग़लत माद्दी इक़्तेदार का दुश्मन है, फिर जमहूरियत की कब ताईद कर सकता है?

रसूल की ख़िलाफ़त में क्या हुआ? तैम व अदी, बनी उमैय्या की बनी हाशिम से पुरानी दुश्मनी और आपसी इत्तेहाद ने बनी हाशिम को हमेशा के लिए शिकस्त दी। सक़ीफ़ा में बनी हाशिम को दूध की मक्खी की तरह निकाल फेंका। कोई बता दे सक़ीफ़ा में जो जमहूरियत क़ाएम की जा रही थी इसमें कितने बनी हाशिम थे, बनी अब्बास का कौन नुमाइन्दा था, बनी उमैय्या का सबसे बड़ा नुमाइन्दा अबुसुफ़यान कब शरीक था, अरब के बाहरी इलाक़ों का कौन नुमाइन्दा था? ज़ियाद बिन लबीद हाकिम हज़रमौत के दरबार की बातचीत तारीख़ों में पढ़ो। हारिस बिन सुराक़ा, अश्अस बिन क़ैस किन्दी, हारिस बिन मुआविया, अरफ़जा बिन अब्दुल्लाह की बहसें ख़िलाफ़त से इन्कार पर देखो, किन्दा पार्टी की सिविल नाफ़रमानी देखो। क्या इसका नाम जमहूरियत है?

जनाब अबूबक्र व उमर से हज़रत अली (अ0) का फ़रमाना कि तुमने ख़िलाफ़त हासिल करने में बड़ी जल्दी की। (किताब अलइमामह वस सियासियह) इसका खुला हुआ क्या मतलब था? इस वोटिंग में दवा दोश व प्रोपेगण्डा कितना हुआ था? बाद वफ़ात जनाब उमर मज्लिसे शूरा किन मिम्बरों से बनाई गई थी और उन मिम्बरों को सिवाए ख़ुद की राए के आम राए से कब चुना गया था? सब मिम्बर हुकूमत के नामज़द करने से चुने गए थे। अली (अ0) का नाम ज़रूरत से रखा था ताकि राए के एक हो जाने से हार तो लाज़मी है, फिर एक मुख़ालिफे जमहूरियत को क्यों एहतेजाज का मौक़ा दें। अली (अ0) को अपने

नाम से इख़्तेलाफ़ का चारा न था। मुत्तफ़िक़ा तौर पर शोहरत दी जाती कि अली (अ0) अपनी ख़िलाफ़त से अलग हो गए, वह कोई ख़िलाफ़त का हक़ नहीं रखते, न दावेदार हैं, दूसरे ख़लीफ़ा के चुनने के बाद भी इन्कार कर रहे हैं। तारीख़ों में देखो अब्दुर रहमान बिन औफ़ सदर कमेटी शूरा मदीने में लश्करी सरदारों और अपने रफ़ीक़ों से मुलाक़ात करके प्रोपेगण्डा करते रहे कि जनाब उसमान को वोट दिया जाए। क्या अली (अ0) मदीने में रहते हुए, इस प्रोपेगण्डे से बेख़बर थे। अब्दुर रहमान ने इब्ने ज़ुबैर से कहा कि अब्देमनाफ़ के घराने में ख़िलाफ़त न जाने जाए, उन्होंने कहा कि मेरा वोट अली (अ0) के लिए होगा। सअ्द ने कहा कि हम तुम अज़ीज़ है। इस लिए वोट हमको देना, उन्होंने मन्जूर कर लिया। (तारीख़े ख़ज़रमी) इसी साज़िश से उस वक़्त भी अली (अ0) महरूम रहे।

अली (अ0) पर ख़िलाफ़ती पहरे

इमाम शोबी नक़ल करते हैं कि जनाब उमर ने क़ुरैश को मदीने में नज़रबन्द कर दिया था जिससे क़ुरैश की जान पर आ बनी थी। वह कहा करते थे कि मुझे उम्मत से लिए सबसे ज़्यादा जिस ख़तरे का डर है, वह तुम लोगों का दूसरे शहरों में फैल जाना है। एक शख़्स क़ुरैश का (शायद हज़रत अली अ0) ने किसी जंग में शिरकत की इजाज़त चाही तो जनाबे उमर ने फरमायाः ''अल्लाह के रसूल (स0) के साथ जो जंगें तुमने की हैं वह बहुत काफ़ी हैं, इसमें बेहतरी है कि न तुम दुनिया को देखो, न दुनिया तुमको देखे।'' यह पालीसी हज़रत उमर सिर्फ क़ुरैशी मुहाजिरों के थी, मक्का वाले इससे अलग थे।

(नह्जुल बलाग़ह इब्ने अबिल हदीद, तारीख़े कामिल, जि–7)

सियासते अलवी पर ग़लत इल्ज़ाम

कहने वाले कहते हैं कि अली (अ0) सियासतदाँ न थे, उनके अहद में नाअम्नी (बदअम्नी) रहीं। एतेराज़ करने वाले को तारीख़ की रौशनी में एक एतेराज़ की हक़ीक़त को देखना चाहिए। किसी शख़्स की सियासत पर बहस करने से पहले उसके माहौल पर नज़र चाहिए। सवाल यह है कि मुसलमानों में इख़्तिलाफ़ अली (अ0) के अहद में हुआ होता, तो इसकी ज़िम्मेदारी अली (अ0) पर लगती। ख़िलाफ़ते अली से बहुत पहले ज़ोरों पर इख़्तिलाफ़ मौजूद था। फिर अली (अ0) ग़ैर सियासी नहीं है, बल्कि वह हस्तियाँ ग़ैर सियासी हैं जिनकी हुकूमत के अहद में जाहिलियत के दबे फ़ित्ने जागे। (ख़ज़रावी) ख़ुद जनाब अबूबक्र का ख़लीफ़ा होना तो इत्तेहाद को क़ायम न रख सका, ख़ुद वह और उनके जानशीन लोगों में यकजहती पैदा न कर सका। (कारलाइल किताब एण्डावेल्स ऑफ स्वैप्टिमा) जबकि लोगों के दिलों में नबुवत की दहशत और सच्चा दीन बाक़ी था उसी वक़्त हज़रत अली (अ0) ख़लीफ़ा जाते, तो आपकी हुकूमत व सियासत कहीं बेहतर और ऊँची होती। (जर्जी ज़ैदान मुअर्रिख़ मसीही) पहली ख़िलाफ़त के ही वक़्त से सूबों की गवर्नरियाँ ऐसों के हाथों में पड़ गईं जो ख़ुदग़र्ज़ नाख़ुदा तर्स, ऐश पसन्द ज़ालिम थे। रिआया ने भी वही रंग इख़्तियार कर लिया था। जनाबे उसमान के अहद की नाअम्नी व पुरआशोबी की तो कोई हद ही न रही थी जो उनके क़त्ल की वजह बनी। हज़रत अली (अ0) को तो वही माहोल मिला जिसमें ख़िलाफ़ते सालिसा की आग अन्दर को जला चुकी थी।

□□□

मेराज

अल्लामा सै0 मुहम्मद रज़ी साहब क़िब्ला मुजतहिद (पाकिस्तान)
अनुवादक– सैय्यद सुफ़यान अहमद नदवी

वह हस्ती पाक है जो रातों–रात अपने बन्दे को मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़्सा तक ले गई जिसके क़रीब हमने बरकत रखी है ताकि उस बन्दे को हम अपनी क़ुदरत की कुछ निशानियाँ दिखाएं बेशक वही बड़ा सुनने वाला, बड़ा देखने वाला है। (अल–अस्रा–1)

इस आयत में मेराज के वाक़ेए की तरफ़ इशारा है। अरबी ज़बान में ''मेराज'' उस चीज़ को कहते हैं जिसके ज़रिए से बुलन्दी और ऊँचाई हासिल की जाए। उस जगह के लिए भी बोलते हैं जहाँ बुलन्द होकर पहुँचा जाए और ख़ुद बुलन्दी और ऊँचाई भी मुराद लेते हैं लेकिन इस्लामी बोलचाल में इससे मुराद हुज़ूर सरवरे आलम (स0) का आलमे मलकूत की सैर करना और अनवारे इलाही का देखना। यह मेराज हुज़ूर (स0) के मुबारक जिस्म के साथ जागते हुए, रात के वक़्त हुई थी दूसरे सभी नबियों (अ0) के वाक़ेआत को देखने से इसका अन्दाज़ा होता है कि बड़े–बड़े नबियों को किसी न किसी ज़माने में और किसी न किसी शक्ल में यह दर्जा मिला है ज़माने और जगह की क़ैदों और रुकावटों को इनसे दूर कर दिया जाता था, दुनिया के छुपे राज़ और न समझ में आने वाली छुपी बातें खोलकर उनके सामने लाई जाती थीं वह अपने–अपने दर्जे के मुताबिक़ ख़ुदा की नेमतों से फायदा उठाते थे और ख़ुदाई दरबार में हाज़िर होकर इस दुनिया में फिर वापस आ जाते थे। हज़रत इब्राहीम (अ0) को जब नुबुव्वत का दर्जा दिया गया तो इरशाद हुआः

''इसी तरह हम इब्राहीम (अ0) को ज़मीन व आसमान की सलतनत को दिखाते हैं।''

(अन्आम–75)

इसी तरह तौरात (तक्वीन–28) में हज़रत याक़ूब (अ0) का सबअ् नाम के कुएँ से निकलना और हारान की तरफ जाने का ज़िक्र मौजूद है और इस के साथ ही इसी तरह की बातों का बयान भी है जिनको मेराज के एक दर्जे की तरह समझा जाता है।

हज़रत मूसा (अ0) को तूर नाम के पहाड़ पर हक़ की तजल्ली नज़र आई यह उनकी मेराज थी। नबियों और रसूलों के वाक़ेआत इस तरह के हालात और बातों से भरे हुए हैं और हर नबी और रसूल ने अपने रुतबे और दर्जे की मुनासेबत से क़ुदरत की छुपी बातों और छुपे राज़ों को देखा है। अस्ल में ''मेराज'' इन्सान की रूहानी बुलन्दी और अल्लाह से क़रीब होने का दूसरा नाम है इसी वजह से मोमिन की नमाज़ को भी हदीस में ''मेराज'' के लफ़्ज़ से याद किया गया है ''नमाज़ मोमिन की मेराज है'' यह रूहानी बुलन्दी तो ख़ुदा का हर क़रीबी बन्दा अपने दर्जे और मक़ाम के मुताबिक़ हासिल करता रहा है। लेकिन चूँकि हज़रत रिसालतमॉब (स0) पहले और बाद वालों में सबसे अफ़ज़ल थे और सभी नबियों और रसूलों के सरदार थे इस लिए ख़ुदा के पाक दरबार में

आपको वह दर्जा और वह मरतबा मिला जो न किसी मुक़र्रब फ़रिश्ते को मिल सका और न किसी रसूल को हासिल हुआ और आप इस मंज़िल में आगे पहुँचे जहाँ वह्यी के फ़रिश्ते हज़रत जिब्रईल को यह अलफ़ाज़ कहने पड़े ''अगर मैं इस जगह से आगे जाउँगा तो नूर और पाक जलवे की सख़्ती और चमक–दमक को बर्दाश्त न कर सकूँगा।'' सही और एतेबार करने वाली रिवायतों के मुताबिक़ यह मेराज सिर्फ़ एक बार हुई। अल्लामा ज़ुरक़ानी ने लिखा है कि यही आम मुहद्दिसीन, मुफ़स्सिरीन और मुतकल्लिमीन की राए है और सही रिवायतों का बराबर होना भी यही बताता है। हाफ़िज इब्ने कसीर ने भी इसी को सही बताया है। ''मेराज'' का वक़्त तो खुद कुर्आन करीम ने बता दिया है कि दिन न था बल्कि रात थी लेकिन तारीख़ में इख़्तिलाफ़ है और किसी मुहद्दिस ने भी इस सिलसिले में कोई सही रिवायत नहीं पेश की है मगर इस बात पर सबका इत्तेफ़ाक़ मालूम होता है कि नबी (स0) के आने के बाद और हिजरत से पहले हुई थी। इस्लामी सीरत लिखने वालों ने इस सिलसिले में कई राए लिखी हैं किसी ने रबीउलअव्वल का महीना लिखा है तो किसी ने रबीउस्सानी का। कोई मेराज को शव्वाल में बताता है कोई रमज़ान और कोई रजब के महीने में कहता है। अल्लामा वाक़दी ने दो रिवायतें लिखी हैं, एक में 17 रमज़ान और दूसरी में 17 रबीउलअव्वल कहा है मगर इब्ने कुतैबा और दीनवरी और इब्ने अब्दुलबर रजब के महीने को कहते हैं और अल्लामा राफ़ई और नूदी ने भी इसी को सही कहा है। मुहद्दिस अब्दुल ग़नी कुद्स ने भी यही कहा है और साथ ही 27 रजब को ख़ास भी किया है। अल्लामा ज़ुरक़ानी ने लिखा है कि लोगों का इसी पर अमल है।

रसूल (स0) की हिजरत से कितना पहले मेराज हुई इसमें भी मुहद्दिसीन के कई अक़वाल हैं लेकिन ज़्यादातर इसी तरह है कि यह हिजरत यानी रबीउलअव्वल 1 हिजरी से एक साल या डेढ़ साल पहले हुई थी। अल्लामा बुख़ारी और अल्लामा इब्ने सअ्द ने हिजरत से पहले के वाक़ेआत में मेराज के बयान को सबसे आख़िर में लिखा जिससे इसका हिजरत से ज़्यादा क़रीब होना मालूम हो रहा है।

मेराज के वाक़ेए को बहुत से रिवायत करने वालों ने बयान किया है। अल्लामा ज़ुरक़ानी ने 45 सहाबियों का नाम लिखा है और उन तमाम किताबों के नाम भी लिखे हैं जिनमें उनकी बयान की हुई रिवायतें मौजूद हैं। सही बुख़ारी और सही मुस्लिम में मुस्तक़िल तौर पर तफ़सील के साथ मेराज के वाक़ेआत का बयान है और उसे सात बड़े सहाबियों के हवाले से रिवायत किया गया है जिनमें अबुज़र ग़फ़फ़ारी (रज़ि0) और हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास (रज़ि0) भी शामिल हैं। इस्लाम के शुरुआती ज़माने के बाद वह मुबारक घड़ी आई जो अल्लाह ने उस रिसालत के खिलते हुए फूल और दुनिया के पैदा करने के मक़सद हज़रत सैय्यिदुल मुरसलीन (स0) की सैर अपने पाक और ख़ुदाई दुनिया को देखने के लिए तैय की थी। फ़रिश्तों को हुक्म मिला कि मेरे ख़ास हबीब के लिए आसमानी रास्तों को सजाएं रिज़वाने जन्नत को हिदायत की गई कि आने वाले की अज़मत के मुताबिक़ जन्नत को सजाएं। जिब्रईले अमीन को कुदरत का इशारा हुआ कि महबूब के लिए वह सवारी ले जाएँ जो बिजली से ज़्यादा

तेज़ रफ्तार, सूरज की किरनों से तेज़ चलने वाली हो और जो इस बलन्द दर्जा मुसाफ़िर के लायक़ हो जो काएनाती दुनिया से पाक परवरदिगार के दरबार की तरफ बुलाया जा रहा है। काएनात की बन्दिशें टूटने लगीं, आग और हवा की फ़ितरतें टूटने लगीं, माद्दों की तबीअतें बदलने लगीं, फ़ज़ा ने रास्ता दिया। आसमानों ने अपने रास्ते खोलकर अदब से रास्ता दिया, फ़ज़ाओं ने नूर की सवारी को कन्धे पर उठाया, ज़माने और जगह की क़ैद ने इस मुक़र्रब मुसाफ़िर के स्वागत में आँखें बिछाईं।

उधर इलाही वह्यी की आवाज़ से सारी ख़ुदाई दुनिया गूँजने लगीः

''वह अल्लाह हर कमी से पाक और पाकीज़ा है जिसने अपने बन्दे को रातों रात मस्जिदे हराम (ख़ाना–ए–काबा) से मस्जिदे अक़्सा तक सैर कराई जिसके क़रीब हमने हर तरह की बरकत तैयार कर रखी है ताकि अपने इस ख़ास बन्दे को अपनी क़ुदरत की निशानियाँ दिखाएँ।''

कुछ मुफ़स्सिरीन ने मस्जिदे अक़्सा से बैतुलमुक़द्दस को मुराद लिया है। मगर आलेमुहम्मद (अ0) की तफ़सीर के मुताबिक़ इससे मुराद वह आसमानी मस्जिद है जो ख़ान–ए–काबा की सीध में चौथे आसमान पर है।

देखने में यह बात बड़ी हैरत वाली है कि एक माद्दी जिस्म पलक झपकते ही आसमानों में चला जाए और ख़ुदाई दुनिया की सैर करके फिर वापस आ जाए और इसी वजह से बहुत से लोगों ने जिस्मानी मेराज से इन्कार कर दिया इस लिए कि उनकी नज़रें और उनकी फ़िक्र की उड़ान घिरी हुई थी। सिर्फ उन ही हदों में जो उनकी समझ के अन्दर थे। सवाल बस इतना ही तो है कि थोड़ी सी देर में इतनी लम्बी दूरी कैसे तै हो गई, गर्मी और ठण्डक के हिस्सों से कैसे गुज़रे और फिर जब नई साइंस ने यह बात साफ़ कर दी है कि आसमानों का वजूद ही नहीं है तो एक आसमान से दूसरे और तीसरे, चौथे और फिर उसके बाद आसमानों तक इस शान से तशरीफ ले जाना जिसका रिवायतों में ज़िक्र है कैसे मुम्किन है। आसमानों को मानने वाले पुराने साइंसदानों ने भी गुत्थियाँ और उलझा दीं। जज़्बे मरकज़ी और दूसरी बहसें शुरु हो गईं मगर यह किसी ने न देखा कि मेराज की ख़बर किसने बयान की है और किसने इस तफ़सील को हम तक पहुँचाया है। यह वाक़ेआ तो ख़ुद उस सच्चे पैग़म्बर ने बयान किया था जिसकी अमानत और सच्चाई पर कभी किसी को शक व शुब्हा न पैदा हो सका। इसके बाद सैकड़ों बड़े सहाबियों (रज़ि0) और ताबईन (रह0) ने इस वाक़ेए की रिवायत की और कभी इसमें शक व शुब्हा ज़ाहिर न किया और कभी किसी तरह की अक़्ल में न आने वाली बात की गई आख़िर यह लोग भी तो अक़्ल रखने वाले थे। ग़लत और सही को परखने वाले और बढ़ाचढ़ाकर बयान करने और हक़ीक़त में फ़र्क करने की ख़ूबी रखते थे। फिर क़ुर्आने करीम साफ़ तौर पर मेराज की ख़बर का एलान कर रहा है। जहाँ तक न समझ में आने वाली बहस का ताल्लुक़ है इसका जवाब सिर्फ यह है कि अगर एक हरकत दूसरी हरकत से तेज़ हो तो कम हरकत तेज़ हरकत के मुक़ाबले में सुकून से बदल जाती है। नबी करीम (स0) जिस तेज़ रफ़्तारी से मेराज में तशरीफ ले गए थे उसके मुक़ाबले में आसमानी हरकत की कोई हैसियत न थी इसलिए यहाँ न समझ में आने वाली चीज़ों की कोई

हैसियत ही नहीं है। अगर आसमान से मुराद सिर्फ बुलन्दी है तो बुलन्दियों की भी क़िस्में मुम्किन हैं जिनको कई आसमानों के नाम से याद किया जा सकता है इसके अलावा आसमान को नीली छतरी कहने वालों ने आज तक यह साबित न किया कि इस के बाद क्या चीज़ है और इस वक़्त आसमानों के मौजूद न होने पर कोई महसूस होने वाली या अक़्ल में आने वाली दलील न पेश कर सके। साइंसी तजुर्बेगाहें सैकड़ों साल से कई ख़यालात और नज़रियात पेश करती रहती हैं। कभी कुछ नज़र आता है तो कभी कुछ और अगर आज एक हक़ीक़त सामने आती है तो कल वह बातिल होकर दूसरी हक़ीक़त सामने लाई जाती है।

मगर क़ुर्आन और हदीसों ने जो पहले कहा था वह अब भी अपनी जगह अटल है। दुनिया वालों के ख़याल मौसम की हवाओं की तरह बदलते रहते हैं मगर ख़ुदा के दरबार से पढ़कर आने वालों की बातों में बदलाव मुम्किन नहीं होता। हवा में जाने वालों ने ज़मीन के ख़िचाव की हदों के बाद जिस फ़िज़ाई क़ैद को देखा है उसकी इससे पहले उन्हें कोई जानकारी नहीं थी।

बड़ी तहक़ीक़ और पसीना बहाने के बाद हमें कुछ ऐटमी ज़र्रे मिल सके जिनसे तेज़ रफ़्तार राकेट बनाकर हमने तेज़रफ़्तारी के हैरत भरे रिकार्ड बनाए और कुछ सेकेण्ड में हज़ारों मील की दूरी तै करने वाली चीज़ें ईजाद कर लीं।

यह तमाम ज़र्रे और ऐटम इस हमारी ज़मीन के न ख़त्म होने वाले ख़ज़ानों का तोहफ़ा हैं जो इन्सान को तहक़ीक़ और तलाश के बाद मिल सके हैं। क्या कोई कह सकता है कि ज़मीन के अन्दर बस इतनी ही चीज़ें थीं और अब इससे ज़्यादा ताक़तवर और तेज़ रफ़्तारी को बढ़ाने वाली कोई दूसरी चीज़ मौजूद नहीं है। इन्सान का इल्म जितना बढ़ता जाएगा उसको काएनात के राज़ों की पहचान होती जाएगी।

नबियों और रसूलों के पहचान और असरदार ताक़तों के सामने हमारे इल्म व तहक़ीक़ की क्या औक़ात और हैसियत है। जिस क़ुदरत वाले ने बेजान ऐटमी ज़र्रों में इतनी ताक़त बख़्शी है क्या वह रसूलों के सरदार, ख़ुदा के नूर, काएनात की पैदाईश के मक़सद और अपने ख़ास हबीब को तेज़ रफ़्तारी का मोजिज़ा नहीं दे सकता! फिर आज तक तहक़ीक़ करने वालों और फ़लसफ़ियों ने तेज़ रफ़्तारी की कोई हद भी नहीं बनाइ है क्या एक सौ साल पहले राकेट की मौजूदा रफ्तार का किसी इन्सान को ख़याल भी होना मुम्किन हो सकता था?............तो बस इसी तरह कुछ ज़माने के बाद यह भी मुम्किन है कि ऐसे राकेट और ऐसी चीज़ें ईजाद कर लिये जाएं जिनकी तेज़ रफ्तारी के मुक़ाबले में आज की तेज़ रफ़्तारी की कोई हैसियत ही न हो और किसी तरह का मुक़ाबला ही बाक़ी न रहे। रौशनी की रफ़्तार, आवाज़ की तेज़ रफ़्तारी, सैय्यारों की तेज़ हरकत और सबसे ज़्यादा ख़ुद हर इंसान की नज़र की तेज़ी की कोई इन्तेहा है! इधर आँख खुली और नूर के मुसाफ़िर के सामने से पर्दा उठा कि एक लम्हे में उसके क़दम करोड़ों मील की दूरी तै करके ज़ुहरा, अतारद, ज़ुह्ल और मिर्रीख़ से भी बहुत दूर–दूर सितारों तक पहुँचने लगे और आँख की नन्हीं से पुतली में बड़ी काएनात समाने लगी। यह सब बनाने वाले की क़ुदरत के करिश्मे हैं जो हर समझदार इन्सान के लिए नसीहत लेने का रास्ता हैं।

इन सभी इलाही निशानियों को देखने के बाद और दुनिया की मख़लूक़ की मामूली बेबिसात चीज़ों का असर और तेज़ रफ़्तारी देखने के बाद ख़ुदाई क़ुदरत और दुनिया के पैदा करने वाले की न घेरे जाने वाली हुकूमत पर थोड़ा सा ग़ौर करने वाला कभी इससे इन्कार की हिम्मत नहीं कर सकता कि मेराज का वाक़ेआ इसलिए ठीक नहीं है कि इसका होना दुनिया के फितरती क़ानून के ख़िलाफ़ है। ऑहज़रत (स0) के इशारों से चाँद का दो टुक्ड़े हो जाना, हाथों पर आकर कंकरियों का तस्बीह पढ़ना, धूप में मुबारक सर पर बादलों का साया करना, रौशनी में मुबारक जिस्म का साया सामने न आना, पत्थर पर पैरों के निशान का उभरना और नर्म ज़मीन पर पैरों के निशानों का पैदा न होना, मग़रिब में डूबे हुए सूरज का पलट आना और इसी तरह के हज़ारों मेजिज़े थे जो अल्लाह ने उस मलकूती रूह और रब्बानी नूर को दिये थे। मेराज भी उन ही मोजिज़ों में से एक बड़ा मोजिज़ा था जो आपकी नबुवत और रिसालत पर क़यामत तक गवाह रहेगा।

अल्लाह को मालूम था कि इन्सान रफ़्तार को बढ़ाने और फ़िज़ाओं पर क़ाबू हासिल करने की कोशिश करेगा। इसलिए उसने अपने आख़री नबी को एक ऐसा तेज़रफ्तारी का मोजिज़ा दे दिया और काएनात की फ़िज़ा और ख़ला की न घेरे जाने वाली दूरियों पर ऐसा क़ाबू दे दिया जो क़यामत तक इन्सानी अक़्ल और इन्सानी सोच की उड़ान के लिए मोजिज़ा बना रहेगा। क़ुर्आने करीम का एलान सच्चा है तो मेराज का वाक़ेआ भी शक व शुब्हे से अलग है। पैग़म्बर (स0) अमानतदार और सच्ची बात कहने वाले थे तो आपका बयान भी यक़ीनन सही व ठीक है। बड़े सहाबी और बड़े ताबईन और इस्लाम के बड़े तहक़ीक़ और फ़िक्र करने वालों की बड़ी शख़सियतों ने इस वाक़ेए को सुन कर हमेशा सर झुका दिया और मेराज के अक़ीदे को अपने ईमान का हिस्सा समझा। यह लोग रसूल (स0) के दौर से जुड़े हुए या क़रीब थे और यह यूनानी और ज़मीन के दूसरे हिस्सों के सभी ख़यालों और सोंचों को पूरी तरह जानते–समझते थे मगर कभी इन्हें इसमें शक न हुआ। रसूल (स0) की पैदाईश अल्लाह ने ख़ास नूर से फरमाई थी, वह क़ाएनात के बनाने की वजह थे इसी नूर की किरनों से नबियों और रसूलों की पैदाइश हुई, इसी नूर के फैलने से सितारों में रौशनी आई, और इसी नूर के साए से काएनात के बेजान ज़र्रों में ज़िन्दगी की उमंगें उभरने लगीं। काएनात की कौन सी मख़लूक़ है जो इस नूर के सदक़े में न बनी हो तो जब किरनों में इतनी ताक़त और तेज़ रफ़्तारी है तो ख़ुद नूर के चश्मे की ताक़त का कौन अन्दाज़ा कर सकता है। जब साए में यह कशिश है तो ख़ुद इस पूरे नूर को देखने की क्या हद होगी और जब पैदा होने वाली मख़लूक़ में यह असर हैं तो जो काएनात के पैदा किये जाने का मक़सद हो और काएनात के ईजाद करने और ज़मीन व आसमान के पैदा करने का वसीला हो उसका असर और जादुई ताक़तों की हदों का अन्दाज़ा कौन कर सकता है–

''गर अर्ज़ व समा की महफ़िल में लौलाक लमा का शोर न हो
यह रंग न हो गुलज़ारों में यह नूर न हो सैय्यारों में।''

शादीख़ाना आबादी

सैय्यिदुल उलमा आयतुल्लाहिल उज़्मा सै0 अली नक़ी नक़वी

(दूसरी क़िस्त)

शौहर व बीवी के आपसी हक़

याद रखना चाहिए कि मर्द की पैरवी औरत पर उस तरह की नहीं वाजिब है जिस तरह बाप की औलाद पर। बाप की इताअत का ऐसा दर्जा है कि औलाद कोई बात कर ही नहीं सकती। और हर बात पैरवी करने वाली है जब तब कि ख़ुदा के अहकाम से न टकराए। यहाँ तक कि अगर वह किसी मुस्तहेब काम से रोक दें तो उसे करना सही नहीं होगा। ज़ियारते सैय्यिदुश्शोहदा सही नहीं है अगर बाप रोक दे, शौहर की इताअत बीवी पर उन चीज़ों में है जो हक़ शौहर और बीवी से जुड़े हैं जैसे घर से क़दम निकालना औरत के लिए जाएज़ नहीं। यहाँ तक कि बाप को बीमार होने पर देखने भी नहीं जा सकती अगर बाप मर जाए तो उसके कफ़न व दफ़न में भी शौहर की इजाज़त के बग़ैर नहीं जा सकती। इन मामलों में शौहर को हक़ दिया है लेकिन ज़िन्दगी के मामलों में शौहर बीवी को मजबूर नहीं कर सकता है और ख़ुदा के हुक्म के ख़िलाफ पैरवी जाएज़ नहीं है।

हम देखते हैं कि बहुत से शौहर अपनी बीवी को ख़ास अज़ीज़ों के सामने करने पर ज़ोर देते हैं। मैं सच कहता हूँ कि यह बिलकुल नाजाएज़ है और औरत पर इस हुक्म में पैरवी जाएज़ नहीं है कि इसमें शौहर का कहना माने। अगर सामने होगी तो यह भी गुनाहगार होगी और वह भी गुनाहगार होगा।

अज़ीज़ों के सामने होना कोई अच्छी बात नहीं है आपके यहाँ जो पर्दा उठ रहा है मैं सच कहता हूँ कि वह मज़हबी फर्ज़ की हैसियत से अन्जाम ही नहीं दिया गया। अगर मज़हबी फर्ज़ की हैसियत से होता तो आज यह सभी लोग जिनको शरीअत ने नामहरम क़रार दिया है नामहरम होते और जिनको महरम क़रार दिया है वह महरम होते। आपने ख़ुद तैय कर लिया है जिसकी वजह से ख़राब नतीजे पैदा होते हैं।

शीश महल में एक साहब ने कहा था कि क्या पर्दे वाले घरानों में इस तरह के हालात नहीं पेश आते जिन्हें आप बेपर्दगी का नतीजा क़रार देते हैं। मैंने कहा ज़रूर पेश आते हैं लेकिन वह भी बेपर्दगी का नतीजा होते हैं। यानी अक्सर उन ही रिश्तेदारों के हाथों जिन्हें शरीअत ने नामहरम क़रार दिया है मगर आप उन्हें महरम बना देते हैं।

मेहर

शादी में महर एक ज़रूरी चीज़ है। मगर क्या इतना मेहर कि जिसका ख़याल भी पूरी तरह नहीं हो सकता। यह बीमारी लखनऊ में सबसे ज़्यादा पाई जाती है। मैंने बाहर देखा कि यह मुसीबत इतनी ज़्यादा नहीं है। क्या बात? यहाँ एक ज़माना था, सलतनत थी, उस वक़्त हर शख़्स बादशाह था। इसलिए उनकी नज़र में सत्तर हज़ार रुपये ऐसे थे जैसे हमारे लिये सत्तर हज़ार पैसे। बल्कि हम में अक्सर ऐसे भी नहीं जिनके पास सत्तर हज़ार पैसे हों। न कि सत्तर हज़ार रुपये और कहाँ सत्तर हज़ार सुर्ख़ सुलतानी ऐसी चीज़ जो कभी देखी नहीं उसे आप क़र्ज़ के तौर पर अपने ऊपर ओढ़ लेते हैं यह किस ख़ुदा ने कहा है?

यह मेहर कोई मामूली चीज़ नहीं है। यह

क़र्ज़ है जो आपके ज़िम्मे पर आता है। इसका देना उसी तरह ज़रूरी है जिस तरह से तमाम क़र्ज़ों का देना ज़रूरी है। नतीजा इस तरीक़े का यह हुआ कि सरकार की तरफ से हैसियत के हिसाब से उसूल तैय हो गया।

अब बताइये कि शरीअत का तैय किया हुआ उसूल किसने तोड़ा? ख़ुद हमारे तरीक़े ने। अगर हम महेर उसी उसूल पर तैय करते जो अक़्ल में आ सके तो हम उस उसूल के टूटने की वजह न बनते। लेकिन हमने शरीअत के हुक्म का इस्तेमाल इस तरह किया कि वह एक बेकार चीज़ हो गई आपका महेर कोई चीज़ नहीं रहा। मैं तो कहता हूँ कि सबसे पहले तो वह होना चाहिए जो सैय्यिदए आलम (स0) का मेहर था (मुझे ख़ुशी है कि इस वक़्त जो अक़्द हो रहा है उसमें वही महेर होगा जो सैय्यिदए आलम (स0) का मेहर था) लेकिन अगर आप बढ़ाना ही चाहते हैं तो इतना बढ़ाइये कि उम्र भर में मुश्किल से अदा हो सके –लेकिन इतना– जिसका चौथाई क्या दस्वां हिस्सा भी वह अदा न कर सके। और फिर लुत्फ यह कि इतने महेर में मामला हो जाता है। वह कहते हैं पचास हज़ार तो वह कहते हैं तीस हज़ार। यह क्या है? यह तकल्लुफ करना भी एक क़ानून बना लिया गया है। महेर इतना होना चाहिए कि अक़्लन अदा कर सके। ऐसी चीज़ें जो आदत के ख़िलाफ हों लेकिन ख़ुदा की क़ुदरत में दाख़िल हों तो उनको मोजिज़ा कहा जाता है मगर मोजिज़ा हर शख़्स के लिए मुमकिन नहीं है। अगर हर शख़्स के लिए मुमकिन हो तो मोजिज़ा, मोजिज़ा न रहे। मोजिज़ा की उम्मीद हर शख़्स को नहीं करनी चाहिए। इस तरह का मेहर तैय करना जो ख़्वाबो ख़याल में भी न आए इसका नतीजा है कि शौहर के दिल में ख़याल होगा कि यह बेकार बात है। इसका मतलब यह है कि वह अक़्द को कोई चीज़ नहीं समझता। और अगर वह ऐसा समझे तो हक़ीक़त में ईजाब व क़बूल ही नहीं हुआ।

जिस चीज़ का नाम है करने का इरादा जो ईजाब व क़बूल की हक़ीक़त है वह नहीं हासिल होगा तो अक़्द बातिल होगा। ज़रूरत है इस बात की कि उन सभी चीज़ों में ख़ानदाने रिसालत के तरीक़े का ख़याल रखा जाए। रसूल (स0) की एक इकलौती लड़की थी। क्या रसूल (स0) के दिल में तमन्नाएं न होंगी। आपको मालूम है कि हज़रत (स0) सैय्यिदा की कितनी इज़्ज़त करते थे, कोई बाप अपनी लड़की की ताज़ीम (Respect) के लिए खड़ा नहीं होता लेकिन रसूल (स0) अपनी बेटी की ताज़ीम (Respect) में खड़े हो जाते थे। इतनी इज़्ज़त करते थे कि हाथों को चूमते थे, इतनी मुहब्बत करते थे कि जब किसी जंग पर जाते थे तो सबसे बाद में सैय्यिदए आलम (स0) से मिलकर जाते थे और जब वापस आते थे तो सबसे पहले सैय्यिदए आलम से मिलते थे। तो क्या रसूल इतना भी नहीं कर सकते थे कि जितना हम अपनी लड़कियों के लिए कर लेते हैं। अगर रसूल (स0) को अपनी बेटी के लिए रुपये की ज़रूरत होती तो मैं सच कहता हूँ कि मुसलमान रुपयों का ढेर लगा देते। आपको मालूम है कि मुसलमानों ने कहा था हमारी तबलीग़ में आपने बड़ी कोशिश की है आप कोई हक़ तैय कीजिये तो यह आयत नाज़िल हुई कि ''मैं कोई हक़ नहीं तैय करता सिवाए अपने रिश्तेदारों की मुहब्बत के।''

अब्दुर्रहमान बिन औफ की हैसियत ऐसी थी जिनके कई सौ जानवर थे। इसी तरह से और बहुत से रसूल के सहाबी थे तो अगर रसूल (स0) इशारे में भी कह देते तो मुसलमान इतना रुपया न इकटठा कर देते आपके सामने? मगर वहाँ तो मतलब ही यह न था। यह मैंने दुनिया के एतेबार से कहा वरना आपका अक़ीदा तो यह है कि रसूल (स0) चाहते तो कंकरियाँ मोती और नगीने बन जाते मगर यह अक़ीदे के बारे में है आम ज़िन्दगी के क़ानून के हिसाब से नहीं क्योंकि रिसालतमॉब और अइम्मा (अ0) अपने पहचाने हुए

क़ानून में आम ज़रियों के हिसाब से अमल करते थे फिर भी यह सब जानते हैं कि आपने किस तरह शादी की। आपके मालूम है कि आपने अपनी उस सबसे अज़ीज़ बेटी का अक़्द अपने सबसे अज़ीज़ भाई के साथ जिस सूरत से किया वह इस दुनिया की तारीख़ में यादगार है।

रिसालतमॉब ने दहेज़ भी दिया था। मगर क्या दहेज़ था (आप भी अपनी हैसियत के हिसाब से दें तो कोई हरज नहीं है मगर इसके लिए यह अच्छा नहीं है कि लड़कियों को बिठा रखा जाए) सामान क्या दिया था? जो चीज़ें लड़की और दामाद के लिए काम आने वाली समझते थे। मैं आपसे यह नहीं कहता कि आप बिलकुल उसी तरह चक्की दीजिये, चर्खा दीजिये, मैं तो कहता हूँ कि ज़िन्दगी की ज़रूरतों के हिसाब से जो कुछ आपसे हो सके वह दीजिये। यह नहीं होना चाहिए कि लड़कियों की शादी के लिए दरख़्वास्तें लिखवाई जा रही हैं मदद की ताकि लोग मदद करें। मेरे पास एक साहब दरख़्वास्त लाए। मैंने कहा कि मैं न लिखूँगा, उनको बड़ा तअज्जुब हुआ। मैंने कहा आख़िर शादी के लिए रुपये की क्या ज़रूरत है? उन्होंने कहा कम से कम एक पानदान, कुछ टूटे–फूटे हुए बर्तन, कुछ जोड़े कपड़े तो हों। मैंने कहा यह सब न होगा तो क्या होगा उन्होंने कहा ज़िल्लत होगी। मैंने कहा इसमें ज़िल्लत होगी और एक के सामने हाथ फैलाने में ज़िल्लत नहीं है।

सैय्यिदए आलम का महेर आपको मालूम है एक सौ सात रुपये था और आपकी नज़र में महेर ज़्यादा होना औरत की इज़्ज़त है मगर शरीअत में औरत के लिए महेर का ज़्यादा होना ज़िल्लत की वजह है।

वलीमा भी शरीअत में सुन्नत है मगर हैसियत के हिसाब से। यह न हो कि वलीमा इस तरह किया जाए कि दो दिन तो ख़ूब तारीफ़ें हुईं मगर जिस वक़्त घर पर कुर्क़ी आएगी और नीलाम हो रहा होगा तो यही तारीफ करने वाले बुरा कहते होंगे और कहेंगे कि लड़की की शादी में अपने को तबाह कर दिया। यह बेकार की रस्मों और यह हिन्दुओं की तक़लीद ऐसी चीज़ें हैं जो हमें बर्बादी की तरफ ले जा रही हैं।

यह समझना कि अब तक उलमा ने इन चीज़ों के सुधार पर ज़ोर क्यों नहीं दिया, ठीक नहीं है। जिस वक़्त जनाब ग़ुफ़रानमॉब (रह0) हिन्दुस्तान तशरीफ लाए आपको नहीं मालूम कि उस वक़्त क्या–क्या होता था। शियों के यहाँ शैख़ सद्दू का बकरा, अहमद कबीर की गाए और ना मालूम किस की कढ़ाई, यह सब कुछ होता था, भवानी जी की पूजा होती थी।

सुधार का तरीक़ा यह है कि हमेशा धीरे–धीरे वाली सूरत इख़्तियार की जाए। आपको मालूम है कि इस्लामी शरीअत में हमेशा से इस हिक्मत और ज़रूरत को सामने रखा गया है। जिस दिन से रिसालतमॉब भेजे गये उसी दिन से नमाज़ व रोज़ा वग़ैरा इतने समझदारी के पहलू रखते थे मगर आपको मालूम है कि उनके अहकाम 1 हिजरी, 2 हिजरी, 3 हिजरी में लागू हुए। जनाब ग़ुफ़रानमॉब ने पहले उन चीज़ों को मिटाया जो लोगों को कुफ़्र और शिर्क की तरफ ले जा रही थीं लेकिन इसके माने यह नहीं हैं कि हम उसी नुक़्ते पर रहें जिस नुक़्ते तक उन्होंने सुधार कर दिया चूँकि अब इन चीज़ों के सुधार करने का काम हो चुका है। अब ज़रूरत है कि क़दम आगे बढ़ाया जाए। ज़रूरत है कि इस वक़्त हम अहलेबैत की शरीअत को और उनकी सीरत को सामने रखें। शादी को एक मज़हबी रस्म समझा जाए और उन बेकार रस्मों से अलग रहा जाए। मुझे बहुत ही ख़ुशी है कि इब्ने हुसैन साहब ने आपके सामने यह मिसाल रखी है जिसमें बेकार रस्में अन्जाम नहीं दी गईं यह भी एक अच्छी मिसाल है जो पेश की जा रही है और मैं उम्मीद करता हूँ कि बहुत जल्द दुनिया में बहुत सी ऐसी मिसालें मिलेंगी।

(26 ज़ीक़ादा 1357)

इदारा

मुख्य समाचार

ईरानी क़ौम मुत्तहिद है, अमरीकी धमकियों का मुँहतोड़ जवाब दिया जाएगा: आयतुल्लाहिलउज़्मा सै0 अली ख़ामेना–ई

आयतुल्लाहिल उज़्मा सै0 अली ख़ामेना–ई ने कहा है कि ईरान की अवाम और हुकूमत अम्न चाहती है, ईरानी क़ौम मुत्तहिद है, हम अपनी आज़ादी और ख़ुदमुख़्तारी का बचाव करने की पूरी सलाहियत रखते हैं और अमरीकी धमकियों का मुँहतोड़ जवाब दिया जाएगा। रहबरे इन्क़ेलाबे इस्लामी ईरान आयतुल्लाह ख़ुमैनी (रह0) के दस्ते रास्त आयतुल्लाह ख़ामेना–ई ने मंगल को आयतुल्लाह इमाम ख़ुमैनी की 19वीं बरसी के मौक़े पर एक बहुत बड़े इज्तेमाअ् को ख़िताब करते हुए यह बात कही। उन्होंने कहा कि अमरीका ने ईरान के ख़िलाफ एक मोर्चा खोल रखा है, ईरान के ख़िलाफ ज़हरीला प्रोपेगण्डा किया जा रहा है लेकिन हमने अहद कर रखा है कि हम अमरीका की धौंस में नहीं आएँगे।

उन्होंने कहा कि हम अमरीका समेत किसी भी ताक़त से जंग के हर मैदान में लड़ने की सलाहियत रखते हैं और अमरीका व इस्राईल हमारे निशाने पर हैं, उन्होंने कहा हमारा ऐटमी प्रोग्राम बिल्कुल पुरअम्न है यह हमारी अपनी ज़रूरत के लिए है इसका किसी जंग से कोई तअल्लुक़ नहीं है। ईरान की हुकूमत और अवाम पुरअम्न है और बराबर कोशिश पर यक़ीन रखते हैं।

उन्होंने कहा कि जिहाद और कोशिश क़ुर्आन की तालीमात का हिस्सा हैं, इमाम ख़ुमैनी (रह0) की ज़िन्दगी से भी हमें यही सबक़ मिलता है।

उन्होंने कहा कि इमाम ख़ुमैनी (रह0) की ज़िन्दगी हमारे लिए औव्वलियत रखती है, यह उनकी तालीमात ही का नतीजा है कि एक इस्लामी रियासत वजूद में आई। उन्होंने कहा कि ईरान इस्राईल को कभी क़बूल नहीं करेगा। उन्होंने कहा कि आज इमाम ख़ुमैनी (रह0) की बरसी के मौक़े पर हम कहना चाहते हैं कि हमारी सियासी क़यादत में इमामे इन्क़ेलाब की रूह मौजूद है ईरान एक ताक़तवर मुल्क है, इसको हिलाना मुम्किन ही नहीं नामुम्किन है।

ईरान के इल्मी ख़ानदान के आलिम हुज्जतुल इस्लाम वलमुस्लिमीन सैय्यद रज़ा शीराज़ी का इन्तेक़ाल

2 जून 2008 ई0 को हुज्जतुल इस्लाम सै0 रज़ा शीराज़ी का हरकते क़ल्ब बन्द हो जाने की वजह से अचानक इन्तेक़ाल हो गया आपकी उम्र 45 साल थी और आपका तअल्लुक़ शीराज़ के मशहूर व मारूफ़ इल्मी ख़ानदान से था। मरहूम आयतुल्लाह सै0 सादिक़ हुसैनी शीराज़ी के भतीजे थे फ़िलहाल आप क़ुम मुक़द्दस में दर्से ख़ारिज दे रहे थे। आपने तक़रीबन 20 किताबें भी लिखीं। इदारा इस बड़े आलिम के इन्तेक़ाल पर रंज और अफसोस का इज़हार करता है और मोमिनीन से फ़ातेहाख़्वानी की दरख़्वास्त करता है।

नूरे हिदायत फाउण्डेशन लखनऊ में इमाम ख़ुमैनी (रह0) की 19वीं बरसी के मौक़े पर सेमिनार

4 जून 2008 ई0 रहबरे इन्क़ेलाबे इस्लामी ईरान आयतुल्लाहिल उज़्मा रूहुल्लाह ख़ुमैनी नव्वरल्लाहु मरक़दहू की 19वीं बरसी के मौक़े पर नूरे हिदायत फाउण्डेशन में सेमिनार हुआ जिसमें मुक़र्रिरीन ने इमाम ख़ुमैनी की ज़िन्दगी के मुख़ललिफ़ पहलुओं का तज़किरा किया। इसके बाद रहबरे इन्क़ेलाब की रूह के ईसाल के लिए फ़ातेहा ख़्वानी की गई।

□□□

तन्ज़ो मिज़ाह के मुम्ताज़ शाएर साग़र ख़ैय्यामी की वफ़ात

क़हक़हों के लिए फ़रियाद करेगी दुनिया
हम न होंगे तो हमें याद करेगी दुनिया

तन्ज़ोमिज़ाह के मुम्ताज़ उर्दू शाएर साग़र ख़ैय्यामी का 19 जून 2008 ई0 को सुबह मुम्बई के नानावती अस्पताल में हरकते क़ल्ब बन्द हो जाने से इन्तेक़ाल हो गया। उनकी मैय्यत को हवाई जहाज़ से लखनऊ लाया गया और दूसरे दिन 20 जून 2008 ई0 को सुबह 9 बजे इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमॉब, लखनऊ में दफ़्न किया गया। आप 70 साल के थे आपके घर वालों में बीवी और तीन बेटे हसन राशिद, हसन शाहिद और हसन रियाज़ हैं। मरहूम को कैंसर की बीमारी थी।

दुनिया भर के उर्दू रिसालों को बराबर अपने मज़ाहिया कलाम से नवाज़ने वाले साग़र ख़ैय्यामी का अस्ल नाम रशीदुल हसन था। अब तक उनके तीन मजमुए ''अण्डर क्रेज़'', ''क़हक़हों की बारात'' और ''पसे रौशनी'' छप चुके हैं। कुल्लियाते साग़र'' अभी तैयार ही किया जा रहा था कि वह इस दुनिया से कूच कर गए। मरहूम इलाज कराने के लिए कई महीनों से मुम्बई के वरसोवा में अपने बेटों के पास रह रहे थे। अभी सात जून को उनकी 70वीं सालगिरह पर उनके लाखों चाहने वालों ने उनकी सेहत की दुआएँ भी की थीं।

साग़र ख़ैय्यामी को उनकी शाहकार मज़ाहिया शायरी के लिए 1997 ई0 में ग़ालिब एवार्ड दिया गया था। कई इदारों और अन्जुमनों ने भी उन्हें एवार्ड और इनाम से नवाज़ा था। साग़र ख़ैय्यामी ने शायरी की शुरुआत जौहर तख़ल्लुस से की थी नज़्में और ग़ज़लें कहने के बाद उन्होंने ज़माने को हंसाने की ज़रूरत को अहम समझा और तन्ज़ो मिज़ाह की शायरी शुरु कर दी। 1972 ई0 के आख़िर में जे0एन0यू0 में लैब असिस्टेन्ट की नौकरी शुरु करने से पहले रोज़ी–रोटी के लिए कभी वह रेलवे में नौकर हुए तो कभी होटल और लांड्री खोली और जनरल मर्चेन्ट की दुकान चलाने को कम न समझा। मरहूम क्रिकेट के भी अच्छे खिलाड़ी थे।

ख़ानदाने इज्तेहाद से जुड़े साग़र ख़ैय्यामी ख़तीबे अक्बर लिसानुश्शोअ्रा मौलाना औलाद हुसैन नक़वी शाएर लखनवी उर्फ मौलाना लल्लन साहब मरहूम के सबसे छोटे लड़के थे। मरहूम के चालीसवें की मज्लिस 27 जुलाई इतवार को सबुह 9 बजे इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमॉब में होगी जिसे मौलाना डाक्टर कल्बे सादिक़ साहब ख़िताब फ़रमाएंगे।

इदारा दुआए मग़फ़िरत के साथ ही मरहूम के घर वालों को ताज़ियत पेश करता है।

इराक़ का सबसे बड़ा मसअला, अमरीकी फ़ौजों की मौजूदगी: आयतुल्लाहिलउज़्मा सै0 अली ख़ामेना–ई

इराक़ में अभी सबसे बड़ा मसला वहाँ अमरीकी फौजों की मौजूदगी है। ईरान के रहबर आयतुल्लाह सै0 अली ख़ामेना–ई ने इन ख़यालात का इज़हार इराक़ के गृहमंत्री नूरुलमालिकी से मुलाक़ात के मौक़े पर किया। ईरानी रहनुमा आयतुल्लाह सै0 अली ख़ामेना–ई ने यह बात उस वक़्त कहीं जब इराक़ की हुकूमत 31 दिसम्बर के बाद मुल्क में फौजों की मौजूदगी को क़ानूनी तौर पर जाएज़ ठहराने के लिए अमरीका के साथ नए मुआहेदे के लिये बातचीत कर रही है। याद रहे कि मुआहदे के बाद 31 दिसम्बर तक अमरीकी फौज की इराक़ में मौजूदगी की इजाज़त दी गई थी। यहाँ बात याद रखने की है कि ईरान और अमरीका दोनों इलाक़े में जारी तशद्दुद के लिए एक दूसरे पर इल्ज़ाम लगाते हैं। ईरान के ऐटमी प्रोग्राम के ताल्लुक़ से अमरीका यह ख़तरा बताता है कि ईरान ऐटम बम बना रहा है जबकि ईरान इन इल्ज़ामों को ग़लत ठहराते हुए यह दावा करता है कि उसका ऐटमी प्रोग्राम पुरअम्न मक़सदों के लिए है। ईरानी रेडियो ने आयतुल्लाह सै0 अली ख़ामेना–ई का वह बयान नक़ल किया है, जिसमें उन्होंने कहा है कि ज़ालिम फ़ौजें ख़ास कर अमरीकी फौजों की इराक़ में मौजूदी इराक़ के इत्तेहाद के रास्ते की बड़ी रुकावट है। उन्होंने अमरीका पर इराक़ के अन्दुरूनी मामलों में घुसने के लिए अपनी फौजी ताक़त के इस्तेमाल का इल्ज़ाम लगाते हुए कहा कि मश्रिक़े वुस्ता के इस मुल्क में अमरीका का ख़्वाब पूरा नहीं होगा। इराक़ में अमरीकी फौजों की मौजूदगी के बारे में मुआहेदे के हिसाब से इराक़ और अमरीका दोनों जगह ज़ोरदार बहस का सिलसिला चल रहा है। इस बहस का जवाब इराक़ में जुमे की नमाज़ के बाद हर हफ़्ते होने वाले मुज़ाहेदों, –जो शिया आलिमे दीन मुक़तदा अल–सद्र की अपील की हिमायत में होते हैं– की शक्ल में हमारे सामने है। और यह भी कि अमरीका ने ईरान पर इराक़–अमरीका मुआहेदा तोड़ने का इल्ज़ाम लगाते हुए कहा है कि अमरीका इराक़ में बराबर अपनी फौजें रखने के लिए इराक़ पर मुआहेदे के लिए दबाव डाल रहा है। अमरीकी दफ़्तरे ख़ारजा के तर्जुमान सेन मैककोर्मिक से जब यह सवाल किया गया कि क्या इराक़ अमरीका के साथ मुआहेदे के लिए ईरानी दबाव को नज़रअन्दाज़ कर देगा? तो इसका जवाब था कि इराक़ एक ख़ुदमुख़्तार मुल्क है। इसलिए वह जो कुछ भी करेगा, अपनी क़ौम के फ़ाएदे के लिए करेगा।